CHAPTER 49

SANSKRIT

Doctoral Theses

01. अवधेश कुमार
पाणिनीय धातुपाठ का भाषावैज्ञानिक अध्ययन ।
निर्देशिका : डॉ. रेखा अरोड़ा
Th 23185

सारांश
(सत्यापित)

शोधमनुष्यों का सार विश्व की भाषाओं में संस्कृत भाषा तथा पाणिनीय व्याकरण का महत्व सर्वस्वीकृत है।-समस्त कार्यकलाप भाषा से व्याप्त और परिचालित है। व्यक्ति, व्यक्ति का पारस्परिक सम्बन्ध अथवा व्यक्ति तथा समाज का पारस्परिक सम्बन्ध भाषा के बिना अकल्पनीय है। भाषाविदों का मानना है कि धातु समस्त सार्थक शब्दराशि का मूल है। प्रस्तुत शोधप्रबन्ध की विषय वस्तु को पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है - धातुपाठ का स्वरूप एवं ध्वनि परिवर्तन तृतीय :भाषा विज्ञान एवं धातु द्वितीय अध्याय :प्रथम अध्याय कृदन्त एवं उपसर्ग युक्त धातुओं की पदसंरचना पंचम :पदसंरचना चतुर्थ अध्याय रूपसंरचना या :अध्याय धातुओं का अर्थनिर्देश प्रथम :अध्यायअध्याय में भाषा, विज्ञान एवं धातु का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में धातुपाठ का स्वरूप एवं ध्वनिपरिवर्तन को विस्तार से स्पष्ट किया गया है। तृतीय अध्याय में पदसंरचना का निरुपण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में कृदन्त एवं उपसर्ग युक्त धातुओं की पदसंरचना का विवेचन किया गया है। पंचम अध्याय में धातुओं के अर्थ निर्देश को स्पष्ट किया गया है।

विषय सूची

1. भाषाविज्ञान एवं धातु 2. धातुपाठ का स्वरूप एवं ध्वनि परिवर्तन 3. रूपसंरचना या पदसंरचना 4. कृदन्त एवं उपसर्ग युक्त धातुओं की पदसंरचना 5. धातुओं का अर्थनिर्देश। निष्कर्ष। सन्दर्भ ग्रंथ सूची।

02. अवनीश कुमार
साधनसमुद्देश एवं केस ग्रामर का तुलनात्मक अध्ययन ।
निर्देशिका : प्रो. दीप्ति त्रिपाठी
Th 22806

सारांश
(असत्यापित)

आदि काल से ही भारत में भाषा चिंतन की विस्तृत परम्परा प्राप्त होती है। वेदों में इसके स्पष्ट प्रमाण उपलब्ध होते हैं। वैदिक चिंतन में प्राप्त सूत्रों का विस्तार दर्शन और व्याकरण में दिखाई देता है। संस्कृत में भाषा के

विश्लेषण की यह परम्परा वैय्याकरण दार्शनिकों में स्फुटित होती हुई भर्तृहरि के वाक्यपदीय के साधनसमुद्देश में भाषा के व्यावहारिक पक्ष की विस्तृत मीमांसा की है। साधन समुद्देश में कारकों का निर्धारण वक्तृविवक्षा से बताया गया है। भर्तृहरि ने कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, अधिकरण छः कारक माने हैं। पाश्चात्य जगत् में भाषिक विश्लेषण के बीज सुकरातअरस्तु में दृष्टिगोचर होते हैं। आधुनिक भाषाविज्ञान में सासूर से प्रारम्भ -प्लेटो- होने वाला यह चिंतन ब्लूमफील्ड, चोम्स्की आदि भाषावैज्ञानिकों से पुष्ट होता हुआ फ़िल्मोर तक पहुँचा और आज भी इसका परिपोषण हो रहा है। आधुनिक भाषाविज्ञान में फ़िल्मोर)1929-2014) ने 'केस ग्रामर' से भाषा के विश्लेषण को एक नूतन दृष्टि प्रदान की। फ़िल्मोर ने अपने अनेक लेखों से कारक सिद्धांत उपस्थापित किया। इनके प्रसिद्ध लेख 'The Case for Case' (1968) से यह सिद्धांत प्रकाशित हुआ। फ़िल्मोर के अनुसार कारक सम्बन्ध वाक्य की आंतरिक संरचना में स्थित विश्व की सभी भाषाओं में होने वाली व्यवस्था है। केस ग्रामर में कारकों के निर्धारण का आधार पदार्थ का वास्तविक सामर्थ्य है। फ़िल्मोर ने अनेक कारक माने और समयसमय - संशोधन पर इनकी संख्या और परिभाषाओं में किया । इनके कारक प्रकर्ता, अनुभावक, करण, कर्म, स्रोत, लक्ष्य, स्थान, समय आदि। साधन समुद्देश एवं केस ग्रामर के तुलनात्मक विश्लेषण से दोनों सिद्धांतों के नयूनाधिक्य का परीक्षण किया गया है। इस विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ है कि विवक्षा से कारकत्व निर्धारण होने पर कारकों की सार्वभाषिकता पुष्ट होती है। प्रस्तुत शोध से आधुनिक भाषविज्ञान की परिकल्पना 'सार्वभौम व्याकरण' को मूर्त रूप देने की दिशा में कारक सिद्धांत सार्थक संभावनाओं को प्रकट करता है।

विषय सूची

1. भाषा का स्वरूप एवं भाषिक विश्लेषण 2. कारक की अवधारणा 3. भर्तृहरि का साधनसमुद्देश 4. फिल्मोर का केस ग्रामर 5. खण्ड क-साधन समुद्देश एवं केस ग्रामर का तुलनात्मक अध्ययन। खण्ड ख-आधुनिक कारकीय व्याकरण में साधन समुद्देश का योगदान। निष्कर्ष एवं उपसंहार। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

03. आशीष कुमार

पूर्वमीमांसादर्शन को चिन्नस्वामी शास्त्री का योगदान (मीमांसान्यायप्रकाश की 'सारविवेचिनी' टीका के विशेष सन्दर्भ में) ।

निर्देशक : डॉ. ओमनाथ बिमली

Th 22807

सारांश
(सत्यापित)

'मीमांसा' शब्द का अर्थ 'विचार' होता है। मन्त्र भाग सहित वैदिक साहित्य में 'मीमांसते' शब्द का प्रयोग मिलता है और ब्राह्मण ग्रन्थों के विभिन्न स्थलों में याग क्रिया विषयक विचार विमर्श के अर्थ में मीमांसा शब्द का प्रयोग मिलता है। पूर्वमीमांसादर्शन में प्रवेश करने के लिये कतिपय प्रकरण ग्रन्थों का प्रणयन हुआ जिनमें आपदेव द्वारा रचित मीमांसान्यायप्रकाश का विशिष्ट स्थान है। इस पर अनेकानेक टिकायें लिखी गई। इन टीकाओं में अब तक की सर्वाङ्गपूर्ण टीका, 'सारविवेचिनी' टीका रचित करने का श्रेय चिन्नस्वामी शास्त्री को है। उनकी यह टीका विद्वत समाज में अत्यंत आदृत है। उन्होंने अपनी इस टीका में मीमांसान्यायप्रकाश के रहस्य को बोधगम्य प्रकार से प्रस्तुत करने के उद्देश्य से 'सारविवेचिनी' की रचना की। मीमांसान्यायप्रकाश में आये हुए संदर्भो को सारविवेचिनीकार ने आचार्यों एवं संप्रदायों को चिह्नित करके प्रस्तुत किया है। यह टीका अत्यन्त गम्भीर एवं

सर्वाङ्गपूर्ण होने के कारण प्रारंभिक अध्येताओं के निमित्त अत्यन्त लाभप्रद है। यह टीका विवेचित विषयों के अभिप्रायार्थ समझने में अत्यन्त लाभकारी है। इस शोधप्रबंध में उक्त सारविवेचिनी टीका की व्याख्या दृष्टि पर - को प्रणालीबद्ध समीक्षात्मक टिप्पणी करने का प्रसास किया गया है। इस अध्ययन एवं तर्कपूर्ण रीति से प्रस्तुत करने के उद्देश्य से इसे सात अध्यायों में विभाजित किया गया है। पूर्वपीठिका प्रथम अध्याय सारविवेचिनी टीका : सारविवेचिनी : सारविवेचिनी टीका में भावनाविमर्श तृतीय अध्याय : में मंगलाचरण एवं धर्मविमर्श द्वितीय अध्याय टीका में विधिविमर्श चतुर्थ अध्याय सारविवेचिनी टीका में : सारविवेचिनी टीका में मंत्रविमर्श पंचम अध्याय : सारविवेचिनी टीका में : सारविवेचिनी टीका में निषेधविमर्श सप्तम अध्याय : नामधेयविमर्श षष्ठ अध्याय अर्थवादविमर्श उपसंहार

विषय सूची

1. पूर्वपीठिका 2. सारविवेचिनी टीका में मंगलाचरण एवं धर्मविमर्श 3. सारविवेचिनी टीका में भावनाविमर्श 4. सारविवेचिनी टीका में विधिविमर्श 5. सारविवेचिनी टीका में मन्त्रविमर्श 6. सारविवेचिनी टीका में नामधेयविमर्श 7. सारविवचिनी टीका में निषेधविमर्श 8. सारविवेचिनी टीका में अर्थवादविमर्श। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

04. आर्य (ललित प्रधान)
महाभाष्य के धात्वधिकार पर प्रदीप का समीक्षात्मक अध्ययन ।
निर्देशक : डॉ. धर्मेन्द्र कुमार
<u>Th 23184</u>

विषय सूची

1. धात्वधिकार के आधारभूत सूत्रों की समीक्षा 2. कृद्विधायक सूत्रों की समीक्षा 3. भूतकालसम्बन्धी सूत्रों की समीक्षा 4. वर्तमानकाल सम्बन्धी सूत्रों की समीक्षा 5. भविष्यत्काल सम्बन्धी सूत्रों की समीक्षा 6. भाववाची प्रत्ययविधायक सूत्रों की समीक्षा 7. लकार विधायक विशिष्ट सूत्रों की समीक्षा 8. अर्थ तथा आदेश विधायक सूत्रों की समीक्षा। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

05. कौशिक (रिंकू)
शाबरभाष्यतर्कपाद की कल्पकलिका टीका का समीक्षात्मक अध्ययन ।
निर्देशक : प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज
<u>Th 23186</u>

सारांश
(असत्यापित)

शाबरभाष्य, जैमिनि सूत्रों पर लिखा गया प्रामाणिक एवं उपलब्ध भाष्य है। कालान्तर में शाबरभाष्य पर अनेक ग्रन्थ लिखे गए, जिनमें कुमारिलकृत श्लोकवार्तिक, तन्त्रवार्तिक एवं टुप्टीका तथा प्रभाकरकृत बृहती प्रथित हैं। बीसवीं शताब्दी में आचार्य हरिहरकृपालुद्विवेदी ने शाबरभाष्य के तर्कपाद पर 'कल्पकलिका' नामक टीका की रचना की। शोधाथी के द्वारा कल्पकलिका टीका को आधार बनाकर ही शोधकार्य किया गया है। यह शोधप्रबन्ध - भूमिका के अतिरिक्त पाँच अध्यायों में विभक्त है। भूमिका में मीमांसादर्शन का ऐतिहासिक विकासक्रम तथा आचार्य हरिहरकृपालुद्विवेदी का परिचय दिया गया है। शोधप्रबन्ध के प्रथम अध्याय 'धर्मस्वरूप विवेचन' में धर्म के

स्वरूप का वर्णन कर 'चोदना' की धर्म के प्रति निमित्तता बतलाई गयी है तथा साथ ही 'चोदना' के अतिरिक्त अन्य प्रमाणों की धर्म के प्रति अनिमित्तता को बतलाया गया है। द्वितीय अध्याय 'प्रमाणविचार एवं प्रत्यक्ष निरूपण' में भारतीय दर्शन के आलोक में प्रमाण की परिभाषा बतलाकर प्रामाण्यवाद की चर्चा की गई है। तदनन्तर प्रत्यक्ष प्रमाण का भेदों सहित विशद विवेचन किया गया है। तृतीय अध्याय 'अनुमानप्रमाणविवेचन-' में सम्पूर्ण भारतीय दर्शन के आलोक में अनुमान एवं उसके भेदों को स्पष्ट करते हुए कल्पकलिकाकार के अनुसार उसका वर्णन किया गया है। अनुमान के अवयव तथा हेत्वाभास का भी सम्यक् विवेचन प्रकृत अध्याय में किया गया है। चतुर्थ अध्याय 'उपमान अर्थापत्ति एवं अभावप्रमाणविवेचन' में कल्पकलिकाकार के अनुसार उपमान, अर्थापत्ति एवं अभाव के विषय में अन्य भारतीय दार्शनिकों का मत दर्शाते हुए उनका वर्णन किया गया है। शोधप्रबन्ध के अन्तिम एवं पाँचवें अध्याय 'शब्दप्रमाण विवेचन' में कल्पकलिकाकार के अनुसार शब्द के स्वरूप को बतलाते हुए उसकी नित्यता को सिद्ध किया गया है। इसी अध्याय में चित्राक्षेपवाद, सम्बन्धाक्षेपवाद, आत्मवाद, वाक्यार्थवाद तथा अपौरुषेयत्ववाद का सम्यक् विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

विषय सूची

1. धर्मस्वरूप विवेचन 2. प्रमाणविचार एवं प्रत्यक्षनिरूपण 3. अनुमानप्रमाण-विवेचन 4. उपमान, अर्थापत्ति एवं अनुपलब्धि प्रमाण विवेचन 5. शब्दप्रमाण विवेचन। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

06. गीता रानी

ऋग्वेद के वरुण विषय मंत्रों का समीक्षात्मक अध्ययन (सायणभाष्य के विशेष सन्दर्भ में) ।

निर्देशक : प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज और डॉ. रणजित बेहेरा

Th 23044

सारांश
(असत्यापित)

शोधविषय की युक्तियुक्तता को ध्यान में रखकर शोधप्रबन्ध के प्रथम अध्याय में 'वेदव्याख्यान परम्परा एवं आचार्य सायण' का निरूपण किया गया है। द्वितीय अध्याय में 'वरुण देवता एक परिचय :' विषयक विचार किया गया है। वेदविद्या के भारतीय एवं विदेशी विद्वानों देवतातत्त्व का जिस प्रकार विमर्श किया है। उसके आधर पर देवतात्व का सामान्यतः और वरुण देव का विशेषतः विचार किया गया है। ऋग्वेद में सृष्टि के नियामक तत्त्व के रूप में ऋत की अवधारणा सर्वविदित है। इस ऋत के रक्षक के रूप में वरुण की प्रतिष्ठा है। अतः (नियामक) तृतीय अध्याय में'वरुण और ऋत' विषयक चर्चा को विस्तार दिया गया है। प्रस्तुत शोधप्रबन्ध में वरुण विषयक मन्त्रों का सायणभाष्य के विशेष सन्दर्भ में विवेचन अपेक्षित था। अतः चतुर्थ अध्याय में वरुण के स्वरूपप्रकाशन में भाष्यकार सायण के वैशिष्ट्य का सूक्ष्म विवेचन प्रस्तुत है। वरुण संबंधी मन्त्रों के सायणसम्मत अभिप्राय का विस्तार पूर्व अध्याय में प्रस्तुत करने के उपरान्त अन्य भाष्यकारों के अभिमत का समीक्षात्मक समावेश पंचम अध्याय में प्रस्तुत है। उत्तरवर्ती साहित्य में वरुण के स्वरूप के विकास अथवा परिवर्तन को समझे बिना वरुण की भारतीय दृष्टि को स्थापित करना सम्भव नहीं है। अतः छठे अध्याय में समावेश किया गया है। इस परम्परागत अभिमत को वरुण की वैश्विक उपस्थिति के माध्यम से परिपुष्ट करने का प्रयास शोधप्रबन्ध के अंतिम सप्तम अध्याय में प्रस्तुत है। जिसका शीर्षक है 'भारतीयेतर परम्पराओं के संदर्भ में ऋग्वेदीय वरुण की समीक्षा'। इस प्रकार उपर्युक्त सात अध्यायों में 'वरुण' देवता के स्वरूप की विविध प्रक्रियाओं के आधार पर सर्वांगीण समीक्षा करने का विनम्र प्रयास इस शोधप्रबन्ध में किया गया है।

विषय सूची

1. वेद व्याख्यान परम्परा एवम् आचार्य सायण 2. वरुण देवता : एक परिचय 3. वरुण और ऋत 4. सायणाचार्य के वरुण विषयक चिन्तन की समीक्षा 5. विविध भाष्यकारों के सन्दर्भ में वरुण 6. ऋग्वेदेतर ग्रन्थों में वरुण के स्वरूप का विकास एवं परिवर्तन 7. भारतीयेतर परमपराओं के सन्दर्भ में ऋग्वेदीय वरुण की समीक्षा। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची। परिशिष्ट।

07. JHA (Chandan Kumar)
Sasadhara's Contribution to Indian Logic and Epistemology.
Supervisor : Prof. Ramesh C. Bhardwaj
Th 22808

Contents

1. Logic and epistemology 2. Causality 3. Perception 4. Inference 5. Sabdabodha (Verbal Testimony). Conclusion. Bibliography.

08. दुबे (सरिता)
श्रीभाष्य पर सुदर्शनभट्ट प्रणीत श्रुतप्रकाशिका का अध्ययन (ब्रह्मसूत्र चतु:सूत्री के सन्दर्भ में) ।
निर्देशक : डॉ. पंकज कुमार मिश्र
Th 22711

सारांश
(असत्यापित)

श्रीभाष्य की सुप्रसिद्ध टीका श्रुतप्रकाशिका के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि विशिष्टाद्वैत के जीव, जगत् एवं ईश्वर सम्बन्धी सिद्धान्त उपनिषदों पर ही आधारित है। रामानुजाचार्य का विशिष्टाद्वैत की स्थापना में महत्त्वपूर्ण योगदान यह है कि उन्होंने अपने विस्तृत एवं पाण्डित्यपूर्ण श्रीभाष्य के माध्यम से एक ओर तो विशिष्टाद्वैत को प्रस्थानत्रयी में प्रतिष्ठित किया तो दूसरी ओर 'महापूर्वपक्ष' के रूप में अद्वैतवाद के 'मायावाद' एवं जीवब्रह्मैक्य का श्रुति, स्मृति एवं अनुभव के आधर पर खण्डन किया। इस क्रम में सुदर्शनभट्ट का योगदान यह है कि उन्होंने विशिष्टाद्वैत वेदान्त के सिद्धान्तों से विरोध रखने वाले जैसे न्यायवैशेष-िक, मीमांसक एवं अद्वैतवेदान्त के सिद्धान्तों का तार्किक एवं शास्त्रीय आधर पर खण्डन करके विशिष्टाद्वैत के सिद्धान्तों को सरल रूप में प्रस्तुत किया है और श्रीभाष्य में प्रतिपादित सिद्धान्तों को जनसाधरण तक पहुँचाने का प्रयास किया है। रामानुजाचार्य एवं सुदर्शनभट्ट ने सर्वप्रथम अनुबन्धजिज्ञासा का वही अधिकारी -चतुष्ट्य को व्याख्यायित करते हुए कहा है कि ब्रह्म-है जिसे कर्म और कर्मफल की अनित्यता का यथोचित ज्ञान हो चुका हो। उसे कर्म बन्धन से मुक्त होने की अभिलाषा होगी तथा स्थिर फल प्राप्ति के फलस्वरूप ब्रह्मजिज्ञास‍ा होगी। अद्वैत वेदान्त में कर्म को विशेष महत्त्व नहीं दिया गया है तथा जगत् को मिथ्या कहा गया है परन्तु सुदर्शनभट्ट ने इसका खण्डन करते हुए जगत् को वास्तविक, वर्णाश्रम धर्म को अनिवार्य माना है। सुदर्शनभट्ट के अनुसार जगत्, सूक्ष्म चित्, अचित् के रूप में ब्रह्म में विद्यमान रहता है उस सूक्ष्म चित्अचित् को मात्रा स्थूल चित्-, अचित् के रूप में प्रकट करना ही सृष्टि है यह सब ईश्वर का लीलाविलास मात्रा है। अन्त में यह कहना सर्वाध्कि अपेक्षित है कि सुदर्शनभट्ट कृत -श्रुतप्रकाशिका विशिष्टाद्वैत रूपी सिद्धान्त को प्रतिप‍ादित करने में टीका के रूप में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

विषय सूची

1. विशिष्टाद्वैत एक परिशीलन एवं सुदर्शनभट्ट का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व 2. जिज्ञासाधिकरण 3. जन्माद्यधिकरण 4. शास्त्रयोन्यधिकरण 5. समन्वयाधिकरण। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

09. महापात्र (सुधांशु कुमार)
श्री गणेश्वर रथ का आधुनिक संस्कृत साहित्य को योगदान ।
निर्देशक : डॉ. प्रदीप्त कुमार पण्डा
Th 22809

विषय सूची

1. श्री गणेश्वर रथ का व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व 2. उत्कल प्रान्तीय संस्कृत काव्य की आधुनिक परम्परा 3. श्री गणेश्वर रथ की कृतियों का साहित्यिक वैशिष्ट्य 4. श्री गणेश्वर रथ की कृतियों का समालोचनात्मक विवेचन 5. श्री गणेश्वर रथ का आधुनिक संस्कृत साहित्य को योगदान। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

10. मिगलानी (शालिनी)
पूर्वमीमांसा में मोक्ष की अवधारणा (ऐतिहासिक सन्दर्भ में) ।
निर्देशक : प्रो. रमेश भारद्वाज
Th 22812

सारांश
(असत्यापित)

पूर्व मीमांसा दर्शन के अनुसार सुख दुखादि आत्मा के विशेष गुणों का उच्छेद होना ही मोक्ष है। पहले शरीर का नाश होने पर भविष्य में दूसरा शरीर न मिलने पर जब आत्मा शरीर रूप उपाधि से वियुक्त हो जाता है तभी मोक्ष की प्राप्ति होती है । मोक्ष की प्राप्ति ज्ञान नैमित्तिक कर्मों में प्रवृति तथा -समुच्चय के द्वारा होती है। नित्य कर्म- काम्य और निषिद्ध कर्मों में निवृतिसे मोक्ष की प्राप्ति होती है।

विषय सूची

1. पूर्वमीमांसा दर्शन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 2. भारतीय दर्शन में मोक्ष की अवधारणा 3. पूर्वमीमांसा में मोक्ष चिन्तन (1200 ई.तक) 4. पूर्वमीमांसा में मोक्ष चिन्तन (1200 ई.के पश्चात्) 5. मीमांसा-सम्मत मोक्ष का आधुनिक सन्दर्भ। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

11. मिश्रा (पूजा)
कविकर्णपूरकृत अलंकारकौस्तुभ में निरूपित काव्यतत्त्वों की समीक्षा : उपलब्ध टीकाओं के आलोक में।
निर्देशक : डॉ. पी.के. पाण्डा
Th 22813

विषय सूची

1. भूमिका 2. काव्यस्वरूपादि समीक्षा 3. शब्दादि समीक्षा 4. ध्वनि समीक्षा 5. गुणीभूतव्यङ्ग्य काव्य-समीक्षा 6. रस-भाव समीक्षा 7. नायक-नायिका समीक्षा 8. गुण-रीति समीक्षा 9. अलंकार-समीक्षा 10. दोष समीक्षा। उपसंहार। परिशिष्ट। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

12. मोनिका

कैयटकृत प्रदीप एवं हरदत्तमिश्रविरचित पदमञ्जरी का समालोचनात्मक अध्ययन : समास प्रकरण के संदर्भ में।

निर्देशिका : डॉ. सरोज गुप्ता

Th 23045

सारांश

(असत्यापित)

मुनित्रय प्रदत्त धरोहर को संभालने वाले परवर्ती वैयाकरणों में प्रदीपकार कैयट व पदमञ्जरीकार हरदत्तमिश्र भी हैं । प्रस्तुत शोधप्रबंध में कैयट तथा हरदत्तमिश्र के ग्रन्थों की समासविषयक अवधारणा का गहन अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन के द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है कि इन आचार्यों के समासविषयक चिन्तन में क्या साम्य तथा वैषम्य है। यदि इनकी समासविषयक अवधारणा में कुछ वैषम्य है तो इनमें कौन अधिक तर्कसंगत है? इसके साथभी आनुषंगिक अनुशीलन करके साथ अन्य पूर्ववर्ती व परवर्ती टीकाओं व अन्य व्याकरणों का-समासविषयक सिद्धान्तों के आलोचकों द्वारा विशिष्ट निष्कर्ष को प्राप्त करने का प्रयत्न किया गया है। इस शोध प्रबन्ध का प्रथम अध्याय "कैयट एवं हरदत्तमिश्र का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व" है। इसके अन्तर्गत कैयट व हरदत्त मिश्र का परिचय, जन्मस्थान, काल एवं कर्तृत्व पर विचार किया गया है। द्वितीय अध्याय "समासवृत्ति विचार" है, इस अध्याय में समास पद का अर्थ एवं स्वरूप, समास के प्रयोजनों एवं समास के वर्गीकरण, वृत्ति का अर्थ, वृत्तियों का वर्गीकरण, वृत्तियों के अवान्तर भेदों में जहत्स्वार्थावृत्ति एवं अजहत्स्वार्थावृत्ति एवं सामर्थ्यविषयक दृष्टिकोण में सामर्थ्य का स्वरूप, एकार्थीभावसामर्थ्य व व्यपेक्षासामर्थ्य पर चर्चा की गई है। वृत्तिविषयक व सामर्थ्यविषयक चर्चा में कात्यायन, पतञ्जलि, भर्तृहरि, भट्टोजिदीक्षित, कौण्डभट्ट, नागेशभट्ट आदि वैयाकरणों के मत का उपस्थापन कर कैयट व हरदत्तमिश्र का पक्ष स्थापित किया गया है। तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम व षष्ठ अध्याय क्रमशः अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि समास व द्वन्द्व समास से सम्बन्धित हैं। इन अध्यायों में समासविषयक सूत्रों पर कैयट व हरदत्त के मतों के विश्लेषण के साथथ इनके व्याख्येय ग्रन्थों महाभाष्य व काशिका में वर्णित मतों का भी सा- यथास्थान वर्णन किया गया है। समासविषयक चिन्तनों व निष्कर्षों को तर्कपूर्ण रीति से प्रस्तुत करने में हरदत्तमिश्र व कैयट की लेखनी सशक्त प्रतीत होती है। इस प्रकार इन दोनों में जो भी दृष्टि विद्यमान है उनमें समासविषयक अध्ययन समास प्रकरण के सर्वाङ्गीण निष्कर्ष को व्यक्त करता है।

विषय सूची

1. कैयट एवं हरदत्त मिश्र का व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व 2. समासवृत्ति विचार 3. अव्ययीभाव समास 4. तत्पुरुष समास 5. बहुव्रीहि समास 6. द्वन्द्व समास। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

13. राहुल रञ्जन

न्यायवैशेषिक दर्शन में आचारमीमांसा।

निर्देशिका : डॉ. संध्या राठौर

Th 22810

विषय सूची

1. न्याय-वैशेषिक दर्शन : एक परम्परा 2. आचारमीमांसा का स्वरूप, महत्त्व एवम् उसके प्रमुख मानदण्ड 3. न्यायवैशेषिक चिन्तन परम्परा के विविध आयाम 4. न्यायवैशेषिक दर्शन में कर्म, पुनर्जन्म एवं नैतिक दर्शन का अवान्तर पक्ष - दान 5. न्यायवैशेषिक दर्शन में आत्मा की अवधारणा। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

14. सन्दीप कुमार
मुकुलभट्ट और मम्मट की शब्दार्थ मीमांसा : एक तुलनात्मक अध्ययन ।
निर्देशिका : डॉ. मीरा द्विवेदी
Th 23047

विषय सूची

1. अभिधा-मीमांसा 2. लक्षणा-मीमांसा 3. व्यञ्जना-मीमांसा 4. प्रकीर्ण। उपसंहार। सन्दर्भ ग्रन्थ सूची।

M.Phil Dissertations

01. अनिल
बृहदारण्यकोपनिष्द् में यज्ञ विमर्श।
निर्देशक : डॉ. सत्यपाल सिंह

02. आर्य (यशदेव)
रामायण के स्त्री-पात्रों का अन्तर्द्वन्द्व : एक मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. रंजन कुमार त्रिपाठी

03. आर्या (इडा)
किरातार्जुनीय व्यायोग की नाट्यशास्त्रीय समीक्षा।
निर्देशक : डॉ. वेदप्रकाश डिण्डोरिया

04. आशुतोष कुमार
शेल्डन पोलॉक की संस्कृत साहित्य के इतिहास विषयक मान्यताओं का समीक्षात्मक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. रंजन कुमार त्रिपाठी

05. कुन्तल (अर्चना)
पाणिनीय तथा वामनीय लिङ्गानुशासनों में लिङ्गनिर्धारण की व्याकरणिक प्रविधियाँ ।
निर्देशिका : डॉ. रेखा अरोडा

06. चित्रा
योगानुशासनप्रकाश का समीक्षात्मक अध्ययन ।
निर्देशक : डॉ. वेदप्रकाश डिंडोरिया

07. झा (ओम प्रकाश)
मण्डन मिश्र-सम्मत भावना-विचार (भावनाविवेक के सन्दर्भ में)।
निर्देशक : डॉ. पंकज कुमार मिश्र

08. दीपक कुमार
तत्त्वोपप्लवसिंहः में प्रमाण-लक्षण-विमर्श (न्याय दर्शन के संदर्भ में)।
निर्देशक : प्रों. रमेश चन्द्र भारद्वाज

09. भट्ट (अरुण किशोर)
सिद्धहैमशब्दानुशासन एवं पाणिनि व्याकरण के स्त्रीप्रत्यय प्रकरणों का तुलनात्मक अध्ययन ।
निर्देशिका : डॉ. ए. सुधा देवी

10. भट्टराई (युवराज)
पाणिनीय व्याकरण में द्विरुक्त प्रकरण : एक अध्ययन ।
निर्देशक : डॉ. धनञ्जयकुमार आचार्य

11. भूपेन्द्र
सरस्वतीकंठाभरण और सिद्धान्तकौमुदी के वैदिक प्रकरणों का तुलनात्मक अध्ययन (स्वर के परिप्रेक्ष्य में)।
निर्देशक : डॉ. सत्यपाल सिंह

12. ममगाई (प्रवीण)
जातकाभरण के प्रथम अध्याय के प्रतिपाद्य विषयों का ऐतिहासिक विवेचन।
निर्देशक : डॉ. उमाशंकर

13. मिश्र (ब्रिजेश कुमार)
पूषन् से सम्बद्ध ऋचाओं में श्रम ।
निर्देशिका : प्रो. शारदा शर्मा

14. यादव (राकेश कुमार)
चमत्कारविचारचर्चा का समीक्षात्मक अध्ययन ।
निर्देशक : डॉ. भारतेन्दु पाण्डेय

15. राजेश कुमार
अथर्ववेदीय दीर्घायुपरक मन्त्र : एक विवेचन।
निर्देशक : डॉ. रणजित बेहेरा

16. रेखा कुमारी
ऋग्वेदीय षष्ठ मण्डल के अग्नि-सूक्तों के सायण-भाष्य का अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. रणजित बेहरा

17. लुहार (रामकरण)
अष्टांगयोग एवं समसामयिक योग अवधारणाएँ (भावातीत ध्यान, सुदर्शन-क्रिया, प्रेक्षाध्यान एवं विपश्यना के विशेष सन्दर्भ में) ।
निर्देशक : डॉ. दया शंकर तिवारी

18. विनीत कुमारी
सिद्धान्तकौमुदी एवं लघुसिद्धान्तकौमुदी की संघटना एवं प्रक्रिया में अन्तर तथा उनके आधार।
निर्देशक : डॉ. सत्यपाल सिंह

19. शर्मा (शिवांगी)
मन्त्रभागवत पर श्रीमद्भागवत का प्रभाव ।
निर्देशिका : प्रो. शारदा शर्मा

20. शर्मा (स्वस्ति)
वेदान्तसञ्ज्ञाप्रकाश का सम्पादन एवं समालोचन ।
निर्देशिका : डॉ. मीरा द्विवेदी

21. सम्पत कुमार
आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी की रसभोग-मीमांसा ।
निर्देशिका : डॉ. मीरा द्विवेदी

22. सुनील कुमार
काव्यसिद्धान्तकारिका का समीक्षात्मक अध्ययन ।
निर्देशक : डॉ. टेकचन्द मीणा

23. सुहासिनी
शब्दप्रभेद कोष तथा संस्कृत स्वनों का मुक्तविकल्पन ।
निर्देशक : डॉ. बलराम शुक्ल

24. हेमचन्द्र
स्फोटतत्त्वनिरूपण की तत्त्वप्रकाशिका टीका का समीक्षात्मक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. बलराम शुक्ल